पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VII Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-1(2020-21)

(अपठित–विभाग)

प्र–१ अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1)सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला है, उसी पर बिल्कुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। बिल्कुल ठगे गये हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था, सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है। इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे।पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे-किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लडियों-सी नदियाँ। मन में तो बस यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक-दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे-धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुंधलेपन में, नीले कोहरे में धुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास, अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं।

1)गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरः गद्यांश का शीर्षक है-कौसानी का अद्भुत सौंदर्य ।

2)लेखक को पहाड़ी नदियाँ किसके समान दिख रही थी?

उत्तरः लेखक को पहाड़ी नदियाँ आपस में उलझ जाने वाली बेलों जैसी दिख रही थीं।

3)लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वह ठगा जा चुका है ?

उत्तरः लेखक अपने साथियों के साथ कौसानी में बरफ़ देखने की इच्छा लेकर गया था, पर बस अड्डे पर पहुँचकर उसने छोटे से उजड़े गाँव में पाया, जहाँ बरफ़ का नाम भी न था। उसे ऐसा लगा कि व ठगा जा चुका है।

4)कौंसानी की पर्वतमाला की सुंदरता का रहस्य क्या है ?

उत्तरः कौसानी पर्वतमाला की सुंदरता का रहस्य है-उसके अंचल में छिपी कत्युर की रंग-बिरंगी घाटी, जो पचासों मील चौड़ी हरे मखमली कालीन जैसी है। यहाँ गेरु की शिलाओं के काटने से बने लाल रास्ते मोह लेते हैं।

5) कौसानी का सौंदर्य लेखक को कैसा लगा? इसे देखकर लेखक के मन में क्या विचार आया?

उत्तरः लेखक को कौसानी का सौंदर्य अत्यंत सुकुमार, सजीला, और निष्कलंक लगा। ऐसे सौंदर्य वाली धरती को देख उसका मन कर रहा था कि वह जूते उतारकर पैरों को पोंछकर आगे बढ़े।

2) गुरु नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ। भारतवर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्भुत गुण है। आज से पाँच सौ वर्ष पहले का देश उनके कुसंस्कारों में उलझा था। जातियों, संप्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानों से वह खंड-विच्छिन्न हो गया था। देश में नये धर्म के आगंतुकों के कारण एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई थी, जो इस देश के हजारों वर्षों के लंबे इतिहास में अपरिचित थी।ऐसे ही दुर्घट काल में इस देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरुषों को उत्पन्न किया, जो सड़ी रूढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुंठित नहीं हुए

और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान सबको नई ज्योति और नया जीवन प्रदान करनेवाले महान् जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। इन संतों की ज्योतिष मंडली में गुरु नानकदेव ऐसे संत हैं, जो शरत्काल के पूर्णचंद्र की तरह ही स्निग्ध, उसी प्रकार शांत-निर्मल, उसी प्रकार रश्मि के भंडार थे। कई संतों ने कस-कस के चोटें मारी; व्यंग्य-बाण छोड़े, तर्क की छुरी चलायी, पर महान् गुरु नानकदेव ने सुधा-लेप का काम किया।यह आश्चर्य की बात है कि विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रांति ले आनेवाला यह संत इतने मधुर, इतने स्निग्ध, इतने मोहक वचनों का बोलनेवाला है। किसी का दिल दुखाये बिना, किसी पर आघात किए बिना, कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखनेवाला, नई संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करनेवाला यह संत मध्यकाल की ज्योतिष्क मंडली में अपनी निराली शोभा से शरत् पूर्णिमा के पूर्णचंद्र की तरह ज्योतिष्मान् है।

1)गुरु नानकदेव का संबंध किस काल से है?

उत्तरः गुरु नानकदेव का संबंध मध्यकाल से है।

2)उल्लसित, कुलाभिमान-संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तरः उल्लसित = उत् + लसित

कुलाभिमान = कुल + अभिमान

3)दुर्घटकाल किस समय को कहा गया है और क्यों?

उत्तरः आज से करीब पाँच सौ साल पहले के काल को दुर्घटकाल कहा गया है, क्योंकि उस समय देश कुसंस्कारों में उलझकर जाति, धर्म, संप्रदाय आदि के नाम पर लड़ रहा था। उस समय नए धर्मांगतुकों का आगमन समस्या बन रहा था।

4)समाज को सुधारने में संतों का क्या योगदान रहा है?

उत्तरः संतों ने समाज में फैली रूढ़ियों, मृतप्राय आचार-विचारों और संकीर्णताओं पर प्रहार किया और सबमें विद्यमान और सबको नया जीवन देने वाले जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करके समाज का कल्याण किया।

5)नानकदेव अन्य संतों से किस तरह भिन्न थे?

उत्तरः अन्य संतों ने लोगों के बुराइयों से बचाने के लिए चोटें मारी, व्यंग्यवाण छोड़े, तर्क के कटु वचन कहे, वहीं गुरुनानक देव ने मधुर, स्निग्ध मोहक वचनों में बिना किसी का दिल दुखाए नई संजीवनीधारा लोगों को प्रदान की।

3)अनुशासन का अर्थ है- नियम-विधियों का पालन करना। इसका सर्वोत्तम रूप है आत्मानुशासन। जिसके तहत स्व को मर्यादा व संयम के दायरे में रखा जाता है। अनुशासित व्यक्ति अपने आचरण से मूल्यों को व्यवहार में ढालकर आदर्श प्रस्तुत करता है। वह आत्म नियंत्रण से विवेकपूर्ण निर्णय लेता है कि कौन-सा कृत्य करने लायक है और कौन-सा त्याज्य। अनुशासन एक प्रकार का भाव है जो लोकमंगल की ओर प्रवृत्त रहता है। समाज, शासन, लोक तथा सदाचार आदि के नियमों का अनुपालन करना अनुशासन का अंग है। अनुशासन नैतिकता से परे नहीं है।

1)उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरः उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है-अनुशासन का महत्त्व।

2)'सर्वोत्तम' आत्मानुशासन में संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तरः सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम

आत्मानुशासन = आत्म + अनुशासन

3)अनुशासन क्या है? इसका सबसे अच्छा रूप क्या है ?

उत्तरः समाज द्वारा बनाए गए नियमों और विधियों का पालन करना अनुशासन है। किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं को

अपने आप ही मर्यादित एवं संयमित दायरे में रखना इसका सबसे अच्छा रूप है।

4)अनुशासित व्यक्ति की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तरः अनुशासित व्यक्ति विवेकपूर्ण निर्णय लेता है।अनुशासित व्यक्ति अपने व्यवहार में मूल्यों को ढालकर आदर्श प्रस्तुत करता है।

5)अनुशासन और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः समाज, शासन लोक और सदाचार आदि के नियमों का भली प्रकार पालन करना ही अनुशासन है। इन्हीं नियमों का पालन करना ही नैतिकता है। अतः अनुशासन और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं हैं।

4)मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हैं।
मेरे में की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझसे अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
में खंडहर को फिर से महल बना सकता है।
जब–जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं,
प्रलय मेध भूधाल देख मुझको शरमाए।
में मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या ।
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

(क) उपर्युक्त काव्य–पंक्तियों में किसका महत्व प्रतिपादित किया गया है?
(ख) स्वर्ग के प्रति मजदूर की विरक्ति का क्या कारण है?
(ग) किन कठिन परिस्थितियों में उसने अपनी निर्भयता प्रकट की है?
(घ) मेरे मैं की संज्ञा भी इतनी व्यापक है, इसमें मुझ से अगणित प्राणी आ जाते हैं।
उपर्युक्त पंक्तियों का भाय स्पष्ट कर लिखिए।
(ङ) अपनी शक्ति और क्षमता के प्रति उसने क्या कहकर अपना आत्म–विश्वास प्रकट किया है?

उत्तर :

(क) उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में मजदूर की शक्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।
(ख) मजदूर निर्माता है । वह अपनी शक्ति से धरती पर स्वर्ग के समान सुंदर बस्तियों बना सकता है। इस कारण उसे स्वर्ग से विरक्ति है।
(ग) मज़दूर ने तूफानों व भूकंप जैसी मुश्किल परिस्थितियों में भी घबराहट प्रकट नहीं की है। वह हर मुसीबत का सामना करने को तैयार रहता है।
(घ) इसका अर्थ यह है कि मैं सर्वनाम शब्द श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। कवि कहना चाहता है कि मजदूर वर्ग में संसार के सभी क्रियाशील प्राणी भा जाते हैं।
(ड) मज़दूर ने कहा है कि वह खंडहर को भी आबाद कर सकता है। उसकी शक्ति के सामने भूचाल, प्रलय व बादल भी झुक जाते हैं।

5)जीवन एक कुआ है।
अधाह– अगम
सबके लिए एक सा वृत्ताकार।
जो भी पास जाता है,
सहज ही तृप्ति, शांति, जीवन पाता है
मगर छिद्र होते हैं जिसके पात्र में
रस्सी–डोर रखने के बाद भी,
हर प्रयत्न करने के बाद भी
यह यहाँ प्यासा–का–प्यासा रह जाता है।
मेरे मन! तूने भी, बार–बार

बड़ी बड़ी रसियाँ बटी
रोज–रोज कुएँ पर गया

तरह–तरह घड़े को चमकाया,
पानी में डुबाया, उतराया
लेकिन तू सदा ही –
प्यासा गया, प्यासा ही आया ।
और दोध तूने दिया
कभी तो कुएं को
कभी पानी को
कभी सब को
मगर कभी जॉचा नहीं खुद को
परखा नहीं पड़े की तली को ।
चीन्हा नहीं उन असंख्य छिद्रों को
और मूढ़ अब तो खुद को परख देख।

(क) कविता में जीवन को कुआँ क्यों कहा गया है? कैसा व्यक्ति कुएँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है?
(ख) कवि का मन सभी प्रकार के प्रयासों के उपरांत भी प्यासा क्यों रह जाता है?
(ग) और तूने दोष दिया.....कभी सबकों का आशय क्या है?
(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो रही हो तो उसे किन बातों की जाँच–परख करनी चाहिए?
(ङ) 'चीन्हा नहीं उन असंख्य छिद्रों को – यहाँ असंख्य छिद्रों के माध्यम से किस ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर :

(क) कवि ने जीवन को कुआँ कहा है, क्योंकि जीवन भी कुएँ की तरह अथाह व अगम है। दोषी व्यक्ति कुएँ के पास जाकर भी प्यासा रह जाता है।
(ख) कवि ने कभी अपना मूल्यांकन नहीं किया। वह अपनी कमियों को नहीं देखता। इस कारण वह सभी प्रकार के प्रयासों के बावजूद प्यासा रह जाता है।
(ग) और तूने दोष दिया....कभी सबको का आशय है कि हम अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी मानते हैं।
(घ) यदि किसी को असफलता प्राप्त हो तो उसे अपनी कमियों के बारे में जानना चाहए। उन्हें सुधार करके कार्य करने चाहिए।
(ड) यहाँ असंख्य छिद्रों के माध्यम से मनुष्य की कमियों की ओर संकेत किया गया है।

लेखन–विभाग

* अनुच्छेद लिखिए।

1)महात्मा गांधी पर अनुच्छेद

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित पोरबन्दर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 ई॰ को हुआ था । उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान के । उनकी माता बड़ी सज्जन और धार्मिक विचारों वाली महिला थी । उन्होंने बचपन से ही गांधी को धार्मिक कथायें सुना-सुना कर उन्हें सात्विक प्रवृति बना दिया था सात वर्ष की आयु में उन्हे स्कूल भेजा गया । स्कूल की पढ़ाई में वे औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे । लेकिन वे अपना कक्षा मे ठीक समय पर नियमित रूप से पहुंचते थे और पाठ को मन लगाकर पढ़ते थे । मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वै कॉलेज में पढ़े और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गये । कुछ समय के बाद सौभाग्य से उन्हें एक बड़ा भारतीय व्यापारी मिला, जिसका दक्षिण अफ्रीका में बड़ा कारोबार था । उसे अपनी किसी उलझे मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका में एक अच्छे वकील की जरूरत थी । उसने गांधी जी काफी बड़ी फीस देकर इस

काम को करने को तैयार कर लिया । उसने गाँधी जी को दक्षिण अफ्रीका बुला लिया ।दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा । उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया । उन्होने उनमे जागृति लाकर उन्हें संगठित किया ।उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए जिस कांग्रेस की स्थापना की, आज भी वह वहां की प्रमुख पार्टी है । गांधी जी और उनके साथियों को कैद करके सजायें दी गई, लेकिन उन्होने अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी । इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने-समाज सुधार और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया । छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन' जैसा आदरणीय सबोधन दिया । हिन्दू-मुस्लिम एकता की रक्षा पर तोउन्होने अपनी जान तक दे दी । ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया । कई बार उन्होने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड कर जेल में डाल दिया । लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी । 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ । गांधी जी की अकस्मात हत्या कर दी गई । एक पागल नौजवान ने उन्हें प्रार्थना-सभा में गोलियो से भून दिया । वह गांधी जी के विचारों का घोर विरोधी था । उनकी हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई ।

2) मकर संक्रांति

भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक मुख्य त्योहार मकर सक्रांति भी है जिसे लगभग पूरे भारत भर में मनाया जाता है यह त्योहार हर वर्ष एक निश्चित तारीख को ही मनाया जाता है इस त्यौहार को जनवरी माह की 14 तारीख को मनाया जाता है|इस त्यौहार को सभी राज्यों में अलग-अलग नाम और विभिन्न विचारधाराओं के साथ मनाया जाता है. पुराने ग्रंथों के अनुसार इस दिन सूर्य धनु राशि से निकल कर मकर राशि में प्रवेश करता है इसलिए इस त्योहार को मकर सक्रांति का नाम दिया गया है|इस दिन कई जगह तिल के लड्डू बनाए जाते हैं तो कुछ जगह पतंगे उड़ाई जाती है और उत्तर प्रदेश राज्य में इस दिन खिचड़ी बनाई जाती है. और जिन राज्यों में पवित्र नदियां बहती है| वहां के लोग सुबह उठ कर उन नदियों में स्नान करते हैं और सूर्य देवता को नमन करते है. इस तरह यह त्यौहार विभिन्न विचारधाराओं और संस्कृतियों का मिलाजुला रूप है| हिंदू धर्म में प्रमुख रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक मकर सक्रांति भी है जिसे हिंदू धर्म के लोग बड़े ही धूमधाम से हर साल जनवरी माह की 14 जनवरी को मनाते है. यह त्यौहार हर साल 14 जनवरी को ही मनाया जाता है कुछ ही ऐसे वर्ष आते है जिसमें इस त्यौहार को 15 जनवरी को मनाया जाता है| मकर सक्रांति का यह त्यौहार पूरे भारत के साथ-साथ नेपाल भूटान बांग्लादेश जैसे देशों में भी धूमधाम से मनाया जाता है नेपाल में तो इस त्यौहार के दिन राजकीय अवकाश भी घोषित किया जाता है. यह त्योहार बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक होता है इस समय चारों ओर मौसम खुशनुमा होता है और मौसम में एक अलग ही ही ताजगी भरी हुई होती है| आज भागदौड़ भरी जिंदगी में त्यौहार ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि त्योहारों के कारण ही लोग एक दूसरे को जानते हैं और इन्हीं के कारण वह अपने सुख दुख बांटते है. इन्हीं त्योहारों के कारण भारत के लोगों में विभिन्नताएं होते हुए भी यहां पर एकता देखने को मिलती है| इन्हीं त्योहारों में से एक मकर सक्रांति भी है जो कि हिंदू धर्म में अपना एक प्रमुख महत्व रखता है यह त्यौहार पूरे भारतवर्ष के साथ-साथ नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश आदि देशों में भी मनाया जाता है. त्योहार हमेशा लोगों को जोड़ने का काम करते हैं इसीलिए सभी लोगों को त्यौहार अच्छे लगते है|

3)हिन्दी दिवस

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत वर्ष 1949 से हुई थी। 14सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था तब से इस भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस हिन्दी दिवसमनाने की शुरुआत हुई थी। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को भारत गणराज्य की आधिकारिक राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया था हालांकि, इसे 26 जनवरी 1950 को देश के संविधान द्वारा आधिकारिक रूप में उपयोग करने का विचार स्वीकृत किया गया था। हिन्दी दिवस को सब बहुत ही खुशी से मनाते हैं। यह भारतीयों के लिए गर्व का क्षण था जब भारत की संविधान सभा ने हिंदी को देश की आधिकारिक राजभाषा के रूप में अपनाया था। संविधान ने वही अनुमोदित किया और देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी आधिकारिक

राजभाषा बन गई। 14 सितंबर, जिस दिन भारत की संविधान सभा ने हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया, हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। कई स्कूल, कॉलेज और कार्यालय इस दिन महान उत्साह के साथ मनाते हैं। कई लोग हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के महत्व के बारे में बात करने के लिए आगे आते हैं। स्कूल हिंदी बहस, हिन्दी दिवस पर कविता और कहानी कहने वाली प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी करते हैं। प्रत्येक वर्ष, ये दिन हमें हमारी वास्तविक पहचान की याद दिलाता है और हमें अपने देश के लोगों के साथ एकजुट करता है। हमें संस्कृति और मूल्यों को बरकरार रखना चाहिए और ये दिन इसके लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति भावना के साथ प्रेरित करता है।

*** पत्र–लेखन लिखिए।**

1)गंदगी की सूचना देते हुए नगर निगम अधिकारी को पत्र ।

B-4/13 अंकुर विहार, लोनी
गाजियाबाद।
दिनांक-16 अगस्त
सेवा में
नगर निगम अधिकारी
लोनी क्षेत्र, गाजियाबाद।

विषय-हमारे क्षेत्र में फैली गंदगी की सूचना हेतु पत्र।

महोदय

मैं अंकुर तथा आसपास के इलाकों में फैली गंदगी तथा सफ़ाई कर्मचारियों की अकर्मण्यता के विषय में आपको सूचित करना चाहता हूँ।

यहाँ जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हैं तथा गलियों में यहाँ-वहाँ कूड़ा फैला है। सफ़ाई कर्मचारी सप्ताह में एक बार भी सफ़ाई नहीं करते तथा नगर निगम की गाड़ियाँ महीनों तक दिखाई नहीं पड़तीं। चारों तरफ़ मक्खी, मच्छर तथा बदबू का साम्राज्य है।

आशा है आप इस विषय में अवश्य कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

ओजस्व तिवारी।

2) मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र|

परीक्षा भवन,
अ. ब. स.
20-जून-2020

प्रिय मित्र दीपक,

सदा सुखी रहो।

मैं कुशल-मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ पर भी सभी कुशल-मंगल होंगें। काफी समय हो गया था न तो तुमसे बात हो पाई और न ही तुम्हारे घर पर किसी से बात कर पाया।

तुम्हारे पिता को फोन किया, तो उनसे ज्ञात हुआ की तुम बोर्ड परीक्षा में मुरादाबाद जिले में प्रथम आये हो। इस समाचार को सुनकर मन ख़ुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था की तुम प्रथम श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे लेकिन यह जानकार की तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है ,मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। इस परीक्षा के लिए तुम्हारे परिश्रम और नियमितता ने ही वास्तव में ऊँचाई तक पहुँचाया है। मुझे पूरी आशा थी की तुम्हारा परिश्रम रंग दिखायेगा और मेरा अनुमान सच साबित हुआ। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया की दृढ संकल्प और कठिन परिश्रम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

मैं सदैव यह कामना करूँगा की तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इस प्रकार मेहनत करते रहो और सभी को प्रसन्नता प्रदान करते रहो।
तुम्हारा मित्र
आकाश

3) विदेश यात्रा पर जाने वाले मित्र को उसकी मंगलमय यात्रा की कामना करते हुए पत्र लिखिए।

14-सी, सूर्या अपार्टमेंट्स
पटपड़गंज
नई दिल्ली-92
दिनांक: 20 मार्च, 20xx
प्रिय मित्र सिद्धार्थ
सप्रेम नमस्कार

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर अत्यंत खुशी हुई कि तुम कंप्यूटर की वेब साइट डिजाइनिंग प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर विजयी रहे हो। अब तुम इस प्रतियोगिता के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने के लिए कनाडा जा रहे हो। तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई। काफ़ी समय से तुम कनाडा जाना भी चाहते थे, यह अवसर तो तुम्हारे लिए 'आम के आम, गुठलियों के दाम' जैसा है। तुम कनाडा घूमने की अपनी चिर अभिलाषित इच्छा को भी पूरा कर लोगे तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भाग भी ले लोगे।

मुझे विश्वास है कि तुम इस प्रतियोगिता में भी अवश्य विजयी रहोगे। दृढ़-निश्चय, लगन व परिश्रम की भावना तुम में कूट-कूट कर भरी है। तुम जिस कार्य में भी हाथ डालते हो उसमें सफलता प्राप्त करके ही रहते हो। कनाडा में तो तुम्हारे मामा जी व मामी जी भी हैं। उनसे भी इसी बहाने तुम्हारी मुलाकात हो जाएगी। इस यात्रा में तुम्हारे साथ तुम्हारे मित्र भी जा रहे हैं, इसलिए तुम यात्रा का आनंद अच्छे से उठा सकोगे।

मैं तुम्हारी इस महत्त्वपूर्ण यात्रा पर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ। ईश्वर तुम्हारी यात्रा को मंगलमय बनाए और तुम इस प्रतियोगिता में विजयी रहो। अपना तथा अपने देश का नाम ऊँचा करो। हमें तुम पर गर्व है।

पुनः मंगलमय यात्रा के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। चाचा जी तथा चाची जी को चरण-स्पर्श तथा मोनू को प्यार।
सद्भावनाओं सहित
तुम्हारा अभिन्न मित्र
शैलेश

* दिनचर्या-लेखन लिखिए।

1) परिक्षा मे कम अंक लाने पर अपने गुण-दोष की समीक्षा।

महेशवाड़ा
28 मार्च, 2018

आज वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। इस बार फिर मैं द्वितीय स्थान पर ही आई। मुझे ऐसा लगता था कि इस बार मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँगी। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हर बार मुझे दूसरा स्थान ही क्यों मिलता रहा है। मुझे स्मरण है कि मैंने चार-पाँच प्रश्नों के उत्तर कई बार काटकर लिखे हैं। ऑभर राइटिंग भी हुई है। मेरी लिखावट भी साफ-सुथरी नहीं होती है। एक बात और है, मुझमे आत्मविश्वास की जबर्दस्त कमी है। मैं कक्षा में भी चुपचाप बैठी रहती हूँ। यदि यही स्थिति रही तो निस्सन्देह, मैं हर जगह मात खा खा जाऊँगी। मुझे आत्मविश्वास जगाना ही होगा।

ऋचा

2) रेल यात्रा के दौरान हुए पॉकेटमारी से हुई परेशानी।

लखनऊ

27 अगस्त, 2018

रेल-यात्रा का सारा मजा ही किरकिरा हो गया जब कानपुर में मैंने अपनी कटी हुई जेब देखी। पटना से चलते समय तक तो मेरे सारे रुपये महफूज थे। मुझे लगता है कि मुगलसराय से इलाहाबाद के बीच अतिशय भीड़-भाड़ में ही मेरी पॉकेटमारी हुई। पाँच हजार मासिक वेतन कमानेवाले के लिए दो हजार रुपये निकल जाना कितना दुखदायी होता है- यह मुझसे ज्यादा कौन अनुभव कर सकता है ? लौटती बार माताजी के लिए दवाई भी लानी थी। समझ में नहीं आता अब इसका बन्दोबस्त कैसे हो पाएगा। अब तो मुझे हर यात्री पॉकेटमार ही नजर आता है।

गणेश गौतम

3) पुरस्कार प्राप्त होने के बाद जो ख़ुशी हुआ।

लखनऊ

23 अक्तूबर, 2020, बुधवार

रात्रि 9 : 30 बजे

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। विद्यालय की प्रार्थना सभा में समस्त विद्यार्थियों के सामने मुझे अंतर्विद्यालयी काव्य-पाठ प्रतियोगिता में जीता गया पुरस्कार दिया गया। घर आने पर मैंने माँ-पिता जी को पुरस्कार दिखाया, तब वे फूले नहीं समाए। दादी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया। अब मैं खाना खाने के बाद सोने जा रहा हूँ।

रोहित कुमार

*** निबंध लिखिए।**

1) मेरा बचपन

बचपन जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण समय होता है. बचपन में इतनी चंचलता और मिठास भरी होती है कि हर कोई फिर से बचपन को जीना चाहता है. बचपन में वह धीरे-धीरे चलना, गिर पड़ना और फिर से उठकर दौड़ लगाना बहुत याद आता है.बचपन में पिताजी के कंधे पर बैठकर मेला देखने का जो मजा होता था वह अब नहीं आता है. बचपन में मिट्टी में खेलना और मिट्टी से छोटे-छोटे खिलौने बनाना किसकी यादों में नहीं बसा है|बचपन में जब कोई डांटता था तो मां के आंचल में जाकर छुप जाते थे. बचपन में मां की लोरियां सुनकर नींद आ जाती थी लेकिन अब वह सुकून भरी नींद नसीब नहीं होती है. बचपन के वो सुनहरे दिन जब हम खेलते रहते थे तो पता ही नहीं चलता कब दिन होता और कब रात हो जाती थी|

बचपन में किसी के बाग में जाकर फल और बैर तोड़ जाते थे तब वहां का माली पीछे भागता था वह दिन किसको याद नहीं आते. शायद इसीलिए बचपन जीवन का सबसे अनमोल पल है.मेरा बचपन सपनों का घर था जहां मैं रोज दादा-दादी के कहानी सुनकर उन कहानियों में ऐसे खो जाता था मानो उन कहानियों का असली पात्र में ही हूं. बचपन के वह दोस्त जिनके साथ रोज सुबह-शाम खेलते, गांव की गलियों के चक्कर काटते और खेतों में जाकर पंछी उड़ाते|मेरा बचपन गांव में ही बीता है इसलिए मुझे बचपन की और भी ज्यादा याद आती है बचपन में हम भैंस के ऊपर बैठकर खेत चले जाते थे तो बकरी के बच्चों के पीछे दौड़ लगाते थे. बचपन में सावन का महीना आने पर हम पेड़ पर झूला डाल कर झूला झूलते थे और ठंडी ठंडी हवा का आनंद लेते थे|बचपन में मैं और मेरे दोस्त गर्मियों की छुट्टियों में बागों में बैर तोड़ने चले जाते थे खट्टे मीठे बेर हमें बहुत पसंद थे जिस कारण हम अपने

आप को रोक नहीं पाते थे बागों के माली लकड़ी लेकर हमें मारने को दौड़ते लेकिन हम तेजी से दौड़ कर घर में छुप जाते थे|.

हमारे घर के बाहर एक बड़ा चौक था जहां पर गांव के सभी बड़े बुजुर्ग शाम को बैठते थे और गांव और देश की चर्चा करते थे. हम भी वहां पर खेलते रहते थे कभी-कभी हमें बुजुर्गों से शिक्षाप्रद कहानियां सुनने को भी मिलती थी.|चौक में हर साल कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता था जिसमें एक छोटी मटकी को माखन से भरकर ऊपर लटका दिया जाता था फिर हम बच्चे और हमारे से बड़े लोग मिलकर छोटी मटकी को फोड़ते थे. यह उत्सव इतना अच्छा होता था कि हम पूरी रात गाना गाते और नाचते रहते थे कृष्ण जन्मोत्सव के दिन मुझे आज भी मेरा बचपन याद आ जाता है|. बचपन में हमारे घर में गाय, भैंस और बकरियां होती थी जिनकी छोटे बच्चों के साथ हम बहुत खेलते थे. हमारे घर में एक शेरू नाम का कुत्ता भी था जिसे हम बहुत प्यार करते थे वह भी हमारा को ख्याल रखता था|

वह दिन मुझे आज भी बहुत याद आता है क्योंकि मैं रास्ता भूल जाने के कारण बहुत रोने लगा था. मेरा बचपन बहुत ही अच्छा रहा है बचपन में मैंने खूब मस्तियां की है जिनकी मीठी यादें आज भी मेरे मस्तिक में बची हुई है आज शहर की इस गुमनाम जिंदगी में भी रस तब घुल आता है जब मैं छोटे बच्चों को खेलते हैं और शैतानियां करते देखता हूं.|

2) गणतंत्र दिवस

भारत की पवित्र भूमि पर अनेक पर्व तथा उत्सव मनाए जाते हैं। इन पर्वो का अपना विशेष महत्त्व होता है। धार्मिक और सांस्कृतिक पर्वो के अतिरिक्त कुछ ऐसे पर्व हैं जिनका संबंध सारे राष्ट्र के जन-जीवन से होता है। इन्हें 'राष्ट्रीय पर्व' कहते हैं। 26 जनवरी इन्हीं में से एक है। यह भी एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय त्योहार है। इसे गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। गणतंत्र का अर्थ है- जनता का राज्य। यह दिन हमारे लिए बड़ा शुभ है। इस दिन हमारा देश गणतंत्र बना था। भारत को स्वतंत्रता तो 15 अगस्त 1947 को ही मिल गई थी, परंतु जब सारे नियम बनाकर संविधान की पुस्तक तैयार कर दी गई तब 26 जनवरी 1950 के दिन भारत को पूरी तरह से स्वतंत्र गणतंत्र बना दिया गया। सारे संसार में इसकी घोषणा हो गई।

भारत 26 जनवरी 1950 में पूरी तरह से स्वतंत्र है और यहाँ जनता का अपना राज्य है। कोई भी मनुष्य भारत का राष्ट्रपति बन सकता है। सबसे पहले राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद थे। वे बिहार के एक गाँव के किसान के लड़के थे, परंतु अपनी योग्यता के कारण राष्ट्रपति बने थे। 26 जनवरी के दिन दिल्ली शहर को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। लोग सवेरे अंधेरे में ही उठकर इंडियागेट की ओर चल पड़ते हैं। नियत समय पर राष्ट्रपति महोदय विजय चौक पर झंडा फहराते हैं। तब तोपों की सलामी दी जाती हैं। राष्ट्रपति की सवारी इंडिया गेट की ओर चल पड़ती है। लाखों लोग इस जुलूस को देखते हैं। राष्ट्रपति की गाड़ी के पीछे जल सेना, वायु सेना और थल सेना के जवान होते हैं। हाथियों और हथियारों के जुलूस निकलते हैं।

इनके पीछे प्रदेशों की कई तरह की झाँकियाँ होती हैं। इनमें उन प्रदेशों (राज्यों) की संस्कृति की झलक दिखाई जाती है।झाँकियों के पीछे स्कूलों के बच्चों की कतारें होती हैं। ये कतारें परेड या नृत्य करती आती है। सब लोग अनुशासन में चलते हैं। इस जुलूस से सबके मन में खुशी की लहर दौड़ जाती है।भारत के सभी प्रदेशों की राजधानियों में भी गणतंत्र दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। प्रदेशों में राज्यपालों के द्वारा झंडा फहराया जाता है। इसके बाद उनका भाषण होता है। फिर लोग खुशी-खुशी अपने-अपने घरों को लौटते हैं। गणतंत्र दिवस समारोह को देखकर भारतवासी गौरव का अनुभव करते हैं।

3) मेरा पसंदीदा खेल (क्रिकेट)पर निबंध

मेरा सबसे पसंदीदा खेल है , क्रिकेट। देश में क्रिकेट प्रेमियों की कमी नहीं है। क्रिकेट एक ऐसा मनोरंजक खेल है जिसमें बल्ले और गेंद के इस्तेमाल की आवश्यकता होती है। यह दुनिया के सबसे लोकप्रिय और बेहतरीन खेलों में से एक है। इस खेल में दो टीमें शामिल हैं, प्रत्येक टीम में 11 खिलाड़ी शामिल हैं। क्रिकेट खेल का मुख्य उद्देश्य सबसे अधिक रन बनाना और कौन सी टीम विपरीत टीम के बल्लेबाज़ों को आउट कर सकती है , इस पर भी निर्भर करता है। क्रिकेट ,मैदान में एक पिच पर खेला जाता है। क्रिकेट इंग्लैंड और भारत जैसे देशो में प्रसिद्ध है। ऐसा कोई भारतीय नहीं जिसे क्रिकेट के बारे में मालुम ना हो। क्रिकेट के दीवाने देश और दुनिया भर में फैले हुए है। वर्तमान समय में भारतीय टीम के कप्तान विराट

कोहली है। विराट कोहली को किंग ऑफ़ क्रिकेट भी कहा जाता है। वन डे क्रिकेट में सबसे ज़्यादा रन विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर ने बनाया है। जब सचिन बैटिंग करते थे , तब पूरा मैदान खचाखच लोगो से भर जाता था।

क्रिकेट के विभिन्न प्रकार हैं, उनमें से प्रत्येक के लिए एक अलग प्रशंसक भी है। कुछ लोग टेस्ट मैच देखना पसंद करते हैं। जबकि कुछ लोग ट्वेंटी -20 का आनंद लेते है जिसमे कम समय के लिए जुड़ाव की आवश्यकता होती है | ट्वेंटी- ट्वेंटी क्रिकेट अत्यधिक मनोरंजक होते हैं। टेस्ट मैच ,क्रिकेट का एक प्रकार है , जो काफी पारंपरिक और बहुत दिनों तक चलता है।कहा तो यूँ जाता है , क्रिकेट अमीरो का खेल है लेकिन क्रिकेट गली मोहल्ले में खेला जाने वाला एक लोकप्रिय खेल है। क्रिकेट को एक मैदान खेला जाता है और इसमें दो दल एक दूसरे के विपरीत खेलते है। एक टीम पहले बल्लेबाज़ी करती है और दूसरी टीम गेंदबाज़ी और फील्डिंग करती ही है। यह गेम ओवर के अनुसार खेला जाता है। हर एक ओवर में छह गेंद डाले जाते है। टीम का स्कोर रनो के अनुसार खेला जाता है।

खेल का निरिक्षण करने के लिए मैदान में दो अधिकारी मौजूद रहते है , जिन्हे अंपायर कहा जाता है। सिक्के उछालकर टॉस करने की प्रक्रिया होती है जहाँ टीमों के कप्तान निर्णय लेते है , कि उन्हें गेंदबाज़ी करनी है या बल्लेबाज़ी। मैदान में मौजूद दोनों अंपायर के सहायता के लिए एक अतिरिक्त अंपायर जो निर्णायक की भूमिका निभाते है , उन्हें थर्ड अंपायर कहा जाता है। इसमें बल्लेबाज़ दो विकेट के बीच दौड़ लगाकर रन बनाते है। इसके आलावा बल्लेबाज़ बल्ले से जब गेंद को सीमा रेखा के पार भेज देता है , तब चौका लगता है और गेंद जब सीमा रेखा के ऊपर से जाने पर बल्लेबाज़ को छह रन मिलता है।

एक वन डे इंटरनेशनल है जिसे ओडीआई के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ दो अंतराष्ट्रीय देश कुल पचास ओवरों के लिए एक दूसरे के खिलाफ खेलते हैं। शायद यही वजह है की ट्वेंटी -20 क्रिकेट आजकल विश्व का सबसे मनोरंजक क्रिकेट गेम बन गया है। इस क्रिकेट को खेलने के लिए केवल 20 ओवर हैं और यह काफी रोमांचक और मनोरंजन से भरपूर होते है। लोग कई बार अपने दफ्तरों से छुट्टी लेकर आईपील या अन्य २० -२० मैचेस लाइव देखने जाते है।

आजकल देश के बड़े शहरों में प्रत्येक दिन राष्ट्रिय और अंतराष्ट्रीय खेलो का आयोजन किया जाता है। क्रिकेट को लेकर छोटे उम्र बच्चो से लेकर बड़ो तक , सभी की दीवानगी देखी जा सकती है। क्रिकेट को खेलने के लिए देशभर में कई प्रशिक्षण केंद्र है ताकि कम उम्र के बच्चे यहाँ आकर इस खेल को भली- भाँती सीख सके। क्रिकेट खेल के साथ लोगो की अपनी भावनाएं जुड़ी होती है। अगर भारत किसी भी क्रिकेट गेम में हार जाए तो देशवासी खाना -पीना बंद कर देते है। क्रिकेट के प्रति लोगो की दीवानगी अलग स्तर की है , जिसे ब्यान करना बेहद मुश्किल है।

*** चित्र वर्णन कीजिए।**

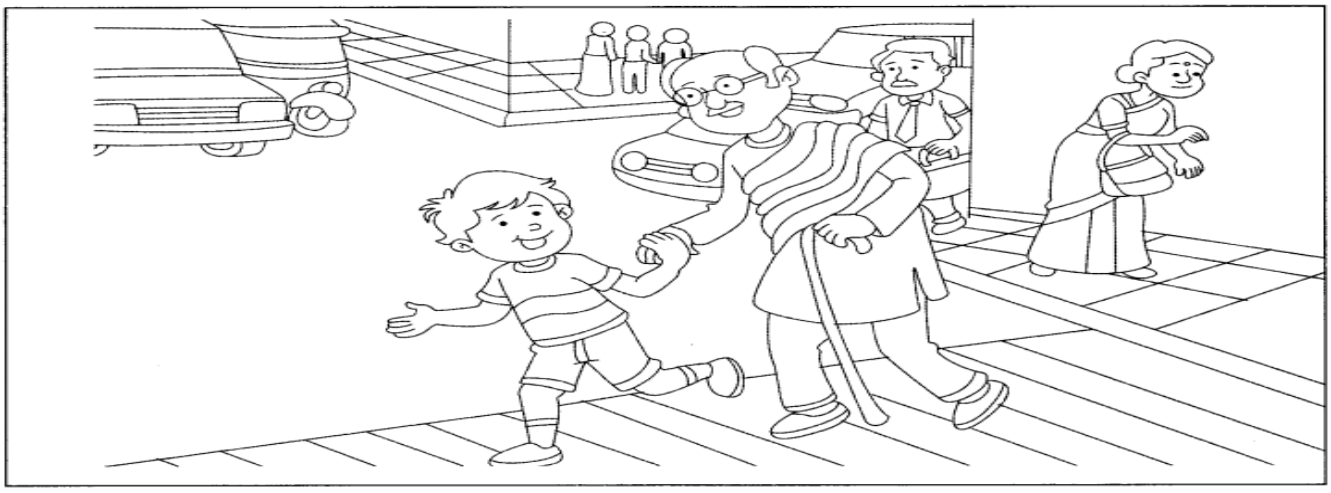

यह किसी महानगर के व्यस्त चौराहे का दृश्य है। यहाँ वाहनों की आवाजाही के कारण वृद्धों के लिए सड़क पार करना टेढ़ी खीर बन गया है। बत्ती लाल होने पर एक बालक किसी वृद्ध को सड़क पार करा रहा है। यह बालक अच्छे संस्कार वाला है। वृद्ध आदमी बड़ा खुश है | लड़का खुशी- खुशी वृद्ध आदमी को सड़क पर करा रहा है| वाहनों की बहुत अवर जवर लगी हुई है |

2) **चित्र वर्णन कीजिए।**

यह चित्र 'स्वच्छ भारत अभियान' से संबंधित है। लोग अपने आसपास साफ़-सफ़ाई रखने के लिए हाथों में झाड़ उठा लिया है। वे कूड़ा उठाकर डस्टबिन में डाल रहे हैं। बच्चे इस अभियान को सफल बनाने के लिए अति उत्साहित हैं। ऐसा हम सबको हर समय करना चाहिए ताकि हमारा देश स्वच्छ हो और लोग स्वस्थ हों। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना और कूड़ा साफ रखना है। यह अभियान 02 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया।

व्याकरण–विभाग

*** प्रत्यय–**

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

जैसे -

समाज + इक = सामाजिक
सुगन्ध + इत = सुगन्धित
भूलना + अक्कड़ = भुलक्कड़
मीठा + आस = मिठास
भला + आई = भलाई

प्रत्यय	**धातु**	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

*** वाक्य-**

किसी भी वाक्य को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं। वाक्य भाषा की महत्वपूर्ण इकाई होता है लिखने या बोलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ लिखा या कहा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।	हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।
सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।	सीता ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गायीं।
पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा।	पतिव्रता नारी को छूने का साहस कौन करेगा।
कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है।	कृषि हमारी व्यवस्था का आधार है।

प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है।	प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।	मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
कुत्ता रेंकता है।	कुत्ता भौंकता है।
मुझे सफल होने की निराशा है।	मुझे सफल होने की आशा नहीं है।

*** कारक-**

1) कर्ता कारक

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले, उसे कर्ता कहते हैं।

दूसरे शब्द में - क्रिया का करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।

जैसे -

- राम ने रावण को मारा।
  लड़की स्कूल जाती है।

2) कर्म कारक- जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते है।

जैसे -

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।

(ii) सीता फल खाती है।

(iii) ममता सितार बजा रही है।

(iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।

(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

3) करण कारक- जिस वस्तु की सहायता से या जिसके द्वारा कोई काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते है।

जैसे -

हम आँखों से देखते है।

इस वाक्य में देखने की क्रिया करने के लिए आँख की सहायता ली गयी है। इसलिए आँखों से करण कारक है।

4) संप्रदान कारक- सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है- देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

(i) **गरीबों** को खाना दो।

(ii) **मेरे** लिए दूध लेकर आओ।

(iii) माँ **बेटे** के लिए सेब लायी।

(iv) अमन ने **श्याम** को गाड़ी दी।

(v) मैं **सूरज** के लिए चाय बना रहा हूँ।
(vii) **भूखे** के लिए रोटी लाओ।
(viii) वे **मेरे** लिए उपहार लाये हैं।
(ix) सोहन **रमेश** को पुस्तक देता है।

5) अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो वहाँ पर अपादान कारक होता है।
हाथ से छड़ी गिर गई।
पेड़ से आम गिरा।
चूहा बिल से बाहर निकला।

6)संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

जैसे -
(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।
(iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।

7)अधिकरण कारक- शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है।
भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।
जैसे -
(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।
(iv) फ्रिज में सेब रखा है।

8)संबोधन कारक- जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।
दूसरे शब्दों में – संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है,
जैसे -
(i) हे ईश्वर! रक्षा करो।
(ii) अरे! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे राम! यह क्या हो गया।

*** उपसर्ग की परिभाषा**

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में– ''उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।'' वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	– अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	– अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	– उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	– भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
दु	– दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	– निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि

क्रिया–विशेषण

– जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं। क्रिया विशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं।

१-काल वाचक क्रिया विशेषण
२-स्थान वाचक क्रिया विशेषण
३-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
४-रीति वाचक क्रिया विशेषण

- **क्रियाविशेषण पहचान के उनके प्रकार के नाम लिखिए|**

1-मैं अभी आ रहा हूं।- कालवाचक क्रियाविशेषण
2- वह संभवत चला गया है | - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3 -फिर कभी चलेंगे। - कालवाचक क्रियाविशेषण
4- जिधर देखो पानी ही पानी है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
5- मैं प्रात:काल उठ जाता हूँ | - कालवाचक क्रियाविशेषण
6 -पानी निरंतर बह रहा है। - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
7-भीतर जाकर बैठिए|- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
8- भाई अवश्य आएगा|- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
9- वह सवेरे टहलने जाता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
10- यहां से चले जाइए।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
11- अधिक खेलना ठीक नहीं |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
12- किधर जा रहे हो |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
13- मेरा घर इस ओर है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण

14- थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
15- वह अधिक बोलता है|- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
16- दिन जल्दी जल्दी ढलता है।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
17- वह बाहर खड़ा है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
18- संभव है कि वह आए|- - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
19- वह मेरे घर बहुधा आता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
20- धीरे-धीरे चलिए |- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

वाक्य

* वाक्य के प्रकार लिखिए|

1) क्या आप आगरा जा रहीं हैं ? – प्रश्नवाचक वाक्य
2) क्या उसने झूठ बोला था ?- प्रश्नवाचक वाक्य
3) आपकी यात्रा शुभ हो।– इच्छावाचक वाक्य
4) लड़कियाँ नृत्य कर रहीं है।- विधानवाचक वाक्य
5) यदि तुम भी मेरे साथ रहोगी तो मुझे अच्छा लगेगा।- संकेतवाचक वाक्य
6) वे बाजार नहीं गए।– निषेधवाचक वाक्य
7) ओह ! कितना सुन्दर दृश्य है।– विस्मयादिवाचक वाक्य
8) वर्षा होती तो अनाज पैदा होता।- संकेतवाचक वाक्य
9) हो सकता है आज धूप न निकले।- निषेधवाचक वाक्य
10) कृपया फोन पर जवाब अवश्य देना।– आज्ञावाचक वाक्य
11) राम क्या कर रहा है ?- प्रश्नवाचक वाक्य
12) आज अच्छी कमाई हो जाती।– विधानवाचक वाक्य
13) शायद महँगाई कुछ कम हो जाए।- इच्छावाचक वाक्य
14) वाह ! भारत ने विश्वकप जीत लिया।- विस्मयादिवाचक वाक्य
15) यहाँ गाड़ी खड़ी करना मना है।- निषेधवाचक वाक्य
16) भारत एक देश है।- विधानवाचक वाक्य
17) दशरथ कहाँ के राजा है?- प्रश्नवाचक वाक्य
18) राम का मकान उधर है।- विधानवाचक वाक्य
19) नववर्ष मंगलमय हो।- इच्छावाचक वाक्य
20) ओह! कितनी ठंडी रात है।- विस्मयादिवाचक वाक्य
21) कृपया शांति बनाये रखें।- आज्ञावाचक वाक्य
22) राम के पिता का नाम दशरथ है।- विधानवाचक वाक्य

मुहावरा

मुहावरा

- 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है 'अभ्यास होना' या 'आदी होना'। इस प्रकार मुहावरा शब्द अपने–आप में स्वयं मुहावरा है, क्योंकि यह अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर असामान्य अर्थ प्रकट करता है। वाक्यांश शब्द से स्पष्ट है कि मुहावरा संक्षिप्त होता है, परन्तु अपने इस संक्षिप्त रूप में ही किसी बड़े विचार या भाव को प्रकट करता है।

1) अंगारों पर पैर रखना– (स्वयं को खतरे में डालना)

- व्यवस्था के खिलाफ लड़ना अंगारों पर पैर रखना है।

2) आँख लगना– (झपकी आना)

- रात एक बजे तक कार्य किया, फिर आँख लग गई।

3) इन तिलों में तेल नहीं– (किसी भी लाभ की आशा न करना)

- कपिल ने कारखाने को देख सोच लिया इन तिलों में तेल नहीं और बैंक से ऋण लेकर बहन का विवाह किया।

4) उल्टी माला फेरना– (अहित सोचना)

- अपने दोस्त के नाम की उल्टी माला फेरना बुरी बात है।

5) एक ही लकड़ी से हाँकना– (अच्छे–बुरे की पहचान न करना)

- कुछ अधिकारी सभी कर्मचारियों को एक ही लकड़ी से हाँकते हैं।

6) ओस पड़ जाना– (लज्जित होना)

- ऑस्ट्रेलिया से एक दिवसीय श्रृंखला बुरी तरह हारने से भारतीय टीम पर ओस पड़ गई।

7) कान भरना– (चुगली करना)

- मंथरा ने कैकेई के कान भरे थे।

8) कान कतरना– (अधिक होशियार हो जाना)

- राम चालाकी में बड़े–बड़ों के कान कतरता है।

9) ख्याली पुलाव पकाना– (कल्पनाएँ करना)

- मूर्ख व्यक्ति ही सदैव ख्याली पुलाव पकाते हैं, क्योंकि वे कुछ करने से पहले ही अपने ख्यालों में खो जाते हैं।

10)गोल कर जाना– (गायब कर देना)

- चालाक व्यक्ति सही बातों का उत्तर गोल कर जाते हैं।

11) घी के दीए जलाना– (खुशियाँ मनाना)

- पृथ्वीराज की मृत्यु सुनकर जयचन्द ने घी के दीए जलाए।

12) चित्त पर चढ़ना– (सदा स्मरण रहना)

- अनुज का दिमाग बहुत तेज है, उसके चित्त पर जो बात चढ़ जाती है, फिर वह उसे कभी नहीं भूलता।

13) जोड़–तोड़ करना– (उपाय करना)

- अब तो जोड़–तोड़ की राजनीति करने वालों की कमी नहीं है।

14) दाना पानी उठना– (जगह छोड़ना)

- विकास की तबदीली हो गई है, यहाँ से उसका दाना पानी उठ गया है।

15) देवता कूच कर जाना– (घबरा जाना)

- पुलिस की पूछताछ से पहले ही नौकर के देवता कूच कर गए।

16) नौ दो ग्यारह होना– (भाग जाना)

- चोर मकान में चोरी कर नौ दो ग्यारह हो गए।

17) नानी याद आना– (मुसीबत का एहसास होना)

- इन्जीनियरिंग की पढ़ाई करते–करते तुम्हें नानी याद आ गई।

18) पानी में आग लगाना– (असम्भव कार्य करना)

- सम्राट अशोक ने लगभग पूरे भारत पर शासन किया, वह पानी में आग लगाने की क्षमता रखता था।

19) मुँह की खाना– (हार जाना/अपमानित होना)

- अमेरिका को वियतनाम युद्ध में मुँह की खानी पड़ी।

1. मुहावरा है

(a) एक वाक्यांश

(b) एक पूर्ण वाक्य

(c) निरर्थक शब्द समूह

(d) सार्थक शब्द समूह

उत्तर :

(a) एक वाक्यांश

2. 'मुहावरा' शब्द है

(a) अरबी भाषा का

(b) फ़ारसी भाषा का

(c) उर्दू भाषा का

(d) हिन्दी भाषा का

उत्तर :

(a) अरबी भाषा का

3. मुहावरे का प्रयोग वाक्य में किया जाता है

(a) भाषा में सजीवता लाने के लिए

(b) भाषा का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए.

(c) भाषा को आकर्षक बनाने के लिए

(d) भाषा में आडम्बर या चमत्कार के लिए

उत्तर :

(a) भाषा में सजीवता लाने के लिए

4. 'आधा तीतर आधा बटेर मुहावरे' का अर्थ है।

(a) आधी–आधी चीजों को साथ रखना

(b) बेमेल चीजों का सम्मिश्रण

(c) सुमेल चीजों को बटोरना

(d) आधी–आधी चीजों को मिलाकार एक करना।

उत्तर :

(b) बेमेल चीजों का सम्मिश्रण

5. 'कलेजे पर पत्थर रखना' का अर्थ है

(a) घोर दुःख या शोक को कठोर हृदय के साथ सहन करना

(b) पहले जैसा न रहना

(c) धोखा खाना

(d) क्रोध में आकर किसी को मिटा देना

उत्तर :

(a) घोर दुःख या शोक को कठोर हृदय के साथ सहन करना

6. 'गुदड़ी का लाल' मुहावरे का अर्थ है

(a) असुविधाओं में उन्नत होने वाला

(b) गरीबी में घिरा होना

(c) गुदड़ी का लाल रंग का होना

(d) महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होना

उत्तर :

(a) असुविधाओं में उन्नत होने वाला

7. 'तीन तेरह करना' मुहावरे का अर्थ है

(a) जैसे को तैसा

(b) पृथक्ता की बात करना

(c) गुस्सा करना

(d) पूरी तरह फट जाना

उत्तर :

(b) पृथक्ता की बात करना

8. 'बाग–बाग होना' मुहावरे का अर्थ है।

(a) मेहनत करना

(b) अति प्रसन्न होना

(c) असम्भावित कार्य करना

(d) मधुर वचन बोलना

उत्तर :

(b) अति प्रसन्न होना

9. राई का पहाड़ बनाना

(a) बढ़ा चढ़ा कर कहना

(b) असम्भव कार्य करना

(c) कलंकित करना

(d) पुष्टि करना

उत्तर : (a) बढ़ा चढ़ा कर कहना

समास

1. द्वन्द्व समास

- माता-पिता
- भाई-बहन
- सुख-दुःख
- ऊँचा – नीचा

राम-कृष्ण
पाप-पुण्य
राजा- रंक
भला- बुरा

2. द्विगु समास

- नवरत्न
- त्रिभुवन
- त्रिफला
- शताब्दी

सप्तदीप
सतमंजिल
पंचवटी
सप्ताह

3. तत्पुरुष समास

मतदाता
जन्मजात
गुणहीन
सत्याग्रह
भयभीत
प्रेमसागर
भारतरत्न
आत्मविश्वास

गिरहकट
मुँहमाँगा
हथकड़ी
धनहीन
जन्मान्ध
दिनचर्या
नीतिनिपुण
घुड़सवार

4. कर्मधारय समास

कालीमिर्च
पीताम्बर
सद्गुण
नीलगाय

नीलकमल
चन्द्रमुखी
महाराजा
भलामानस

नीलकंठ नीलांबर

5. अव्ययीभाव समास

यथास्थान आजीवन
प्रतिदिन यथासमय
भरपेट आमरण
निडर दिनोंदिन
हाथोंहाथ प्रतिदिन
यथामति भरसक

6. बहुव्रीहि समास

महात्मा नीलकण्ठ
लम्बोदर गिरिधर
चक्रधर चन्द्रशेखर
चतुर्भूज दशानन
नीलकंठ त्रिनेत्र

शब्द – सन्धि – विच्छेद

मात्रुपदेश – मातृ + उपदेश
ध्वन्यात्मक – ध्वनि + आत्मक
अत्याचार – अति + आचार
ऋग्वेद – ऋक् + वेद
युववाणी – युव + वाणी
दुर्दशा – दुः + दशा
निर्भय – निः + भय
उन्नयन – उत् + नयन
दुश्शासन – दुः + शासन
यजुर्वेद – यजुः + वेद
पर्यावरण – परि + आवरण
अभ्यागत – अभि + आगत
व्याख्यान – वि + आख्यान
सद्धर्म – सत् + धर्म
मनीष – मन + ईष
दुर्लभ – दुः + लभ
यशोगान – यशः + भूमि
सन्मान – सत् + मान
शिरोरेखा – शिरः + रेखा
नमस्कार – नमः + कार

साहित्य-विभाग

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?
उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2) 'जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता' इसका क्या प्रमाण है?
उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें

अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3) रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

4) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर– कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

5) कवि की बेचैनी का क्या कारण था?

उत्तर– कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

6) आस–पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर– आस–पास के लोग कपड़े की नोंक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

7) उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर– उत्तर भारत में खान–पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

8) आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर– आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

9) स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में क्या फ़र्क आया है? इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर– स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी आई है जिससे लोगों का आकर्षण कम हुआ है। इसका कारण है उन वस्तुओं में मिलावट किया जाना, जिनसे तैयार की जाती है।

10) मथुरा–आगरा के कौन–से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?

उत्तर– मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट–पेठा प्रसिद्ध है।

11) गोपियाँ दही क्यों बिलो रही थीं?

उत्तर- गोपियाँ दही बिलोकर मक्खन निकालना चाह रही थीं।

12) कैसी बूंदें पड़ रही थीं।

उत्तर- नन्हीं-नन्हीं बूंदे पड़ रही थीं।

13) मीरा को सावन मन भावन क्यों लगने लगा?

उत्तर- मीरा को सावन मन भावन लगने लगा, क्योंकि सावन के आते ही उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक हो गई|

14) सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?

उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगल पांडे ने मार्च 1857 में बैरकपुर सैनिक छावनी से की थी।

15)वीर कुंवर सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का जन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।

16) बाबू कुँवर सिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?

उत्तर- बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

17) गांधी जी कौन-सा आश्रम बना रहे थे?

उत्तर- गांधी जी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम बना रहे थे।

18)आश्रम में शुरुआत में कितने लोग थे?

उत्तर- आश्रम में शुरुआत में चालीस लोग थे।

19)पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें रखी जाती थीं?

उत्तर- पुस्तकालय में तीन हजार पुस्तकें रखी जाती थीं।

20)शिक्षण के सामान में कितने हथकरघों की आवश्यकता होगी?
उत्तर- पाँच-छह देशी हथकरघों की आवश्यकता होगी।
21)गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब की थी?
उत्तर- गांधी जी ने आश्रम की स्थापना दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद की थी।
22) कवि अन्य कवियों से क्या आह्वान करता है?
उत्तर- क्रांतिकारी गीत की रचना के लिए आह्वान करता है।
23)क्रांति लाने के लिए कवि किसका सहारा लेता है?
उत्तर- क्रांति लाने के लिए कवि गीत का सहारा लेता है।
24) कवि के कंठ से निकले गीत का क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर- कवि के कंठ से निकले गीत जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं और रुढ़िवादी विचारों का नाश हो जाएगा।

बाल-महाभारत

प्रश्न-1 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?
उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।
प्रश्न-2 संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?
उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ़ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।
प्रश्न-3 पहले श्रीकृष्ण किसके भवन में गए?
उत्तर – पहले श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए।
प्रश्न-4 श्रीकृष्ण हस्तिनापुर किस उद्देश्य से गए?
उत्तर - शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए।
प्रश्न-5 धृतराष्ट्र से मिलने के बाद श्रीकृष्ण किससे मिलने गए?
उत्तर – धृतराष्ट्र से विदा लेकर श्रीकृष्ण विदुर के भवन में गए। कुंती वहीं कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी थी।
प्रश्न-6 श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध कहाँ किया गया और क्यों?
उत्तर- दुःशासन का भवन दुर्योधन के भवन से अधिक ऊँचा और सुंदर था। इसलिए धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि उसी भवन में श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध किया जाए।
प्रश्न-7 कौरवों की सेना के नायक कौन थे?
उत्तर - कौरवों की सेना के नायक भीष्म पितामह थे ।
प्रश्न-8 किसे पांडवों की सेना का नायक बनाया गया?
उत्तर – वीर कुमार धृष्टद्युम्न को पांडवों की सेना का नायक बनाया गया।
प्रश्न-9 घटोत्कच कौन था?
उत्तर – घटोत्कच भीम का पुत्र था।
प्रश्न-10 चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के कितने भाई मारे गए?
उत्तर - चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के आठ भाई मारे गए।
प्रश्न-11 घटोत्कच के क्रोध का क्या कारण था?
उत्तर- अपने पिता को मूर्च्छित देखकर घटोत्कच को क्रोध आ गया।
प्रश्न-12 कुमार शंख की मृत्यु कब हुई?
उत्तर – सांतवें दिन के युद्ध में कुमार शंख की मृत्यु कब हुई।

प्रश्न-13 आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के कितने बेटों का वध किया?
उत्तर – आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के आठ बेटों का वध किया।
प्रश्न-14 द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?
उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।
प्रश्न-15 तेरहवें दिन अर्जुन को युद्ध के लिए किसने ललकारा?
उत्तर- तेरहवें दिन संशप्तकों (त्रिगर्ता) ने अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा।
प्रश्न-16 तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ किस दिशा की ओर चले गए?
उत्तर – तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ दक्षिण दिशा की ओर चले गए।
प्रश्न-17 मद्रराज शल्य का वध किसने किया?
उत्तर – मद्रराज शल्य का वध युधिष्ठिर ने किया।
प्रश्न-18 शकुनि का वध किसने किया?
उत्तर – शकुनि का वध सहदेव ने किया।
प्रश्न-19 कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति किसे नियुक्त किया गया?
उत्तर – कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति मद्रराज शल्य को नियुक्त किया गया।
प्रश्न-20 द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने किसको सेनापति मनोनीत किया?
उत्तर – द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने कर्ण को सेनापति मनोनीत किया।

* लघु उत्तरीय

1)गांधी जी को आश्रम के लिए कितने स्थान की ज़रूरत थी और क्यों?
उत्तर- साबरमती आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने, इनमें हर महीने दस अतिथियों के आने की संभावना, जिनमें तीन या पाँच सपरिवार आने की उम्मीद थी। अतः आश्रम में तीन रसोईघर तथा रहने के मकान के लिए 50,000 फुट क्षेत्रफल में बने मकान की आवश्यकता थी। इसके अलावे-खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की ज़रूरत थी, क्योंकि इतने लोगों के भोजन का सामान खरीदना कठिन था।

2)कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?
उत्तर- कवि का मानना है कि विप्लव गान द्वारा ही वह लोगों को समाज के नवनिर्माण के लिए जाग्रत कर सकता है, क्योंकि सुंदर राष्ट्र की नींव पुराने, गले-सड़े रीति-रिवाजों व रूढ़िवादी विचारों पर नहीं रखा जा सकता।

3)आज़मगढ़ की ओर जाने का वीर कुंवर सिंह का क्या उद्देश्य था?
उत्तर- वीर कुंवर सिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना। उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताका फहराते हुए जगदीशपुर तक पहुंच गए।

4) वीर कुंवर सिंह ने अपना बायाँ हाथ गंगा मैया को समर्पित क्यों किया?
उत्तर- जब कुँवर सिंह शिवराजपुर नामक स्थान से सेनाओं को गंगा पार करवा रहे थे तो अंतिम नाव पर वे स्वयं बैठे थे। उसी समय उनकी खोज में अंग्रेज सेनापति डगलस आया। उसने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। उसी समय दूसरे तट से अंग्रेजों की एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी। शरीर में जहर फैलने के डर से कुँवर सिंह ने तत्काल अपनी तलवार निकाली और हाथ काटकर गंगा में भेंट कर दिया।

5) माता यशोदा अपने कृष्ण को किस प्रकार और क्या कहकर जगा रही है?
उत्तर- माता यशोदा अपने ललना श्रीकृष्ण को तरह-तरह के संकेत देकर जगाती है। वह अपने पुत्र से कहती है कि हे वंशीवाले प्यारे कन्हा! जागो रात बीत चुकी है। सुबह हो गई है। घरों के दरवाजे खुल गए हैं। गोपियाँ दही बिलो रही हैं। ग्वाल बाल द्वार पर खड़े होकर तुम्हारी जयकार कर रहे हैं। यानी वे गायों को लेकर जाने की

तैयारी में हैं।

6) मीरा ने सावन का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- कविता के दूसरे पद में मीरा ने सावन का वर्णन अनुपम ढंग से किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मन-भावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग आ जाती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है। चारों ओर से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है, नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही हैं तथा मंद-मंद शीतल वायु चल रही है।

7)खानपान संस्कृति का "राष्ट्रीय एकता" में क्या योगदान है?

उत्तर– खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। खाने–पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

8) रहीम ने क़ार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है?

उत्तर- रहीम ने क़ार के बादलों की तुलना उन लोगों से की है जो अमीरी से निर्धन हो चुके हैं। निर्धन लोग जब उन दिनों की बात करते हैं, जब वे धनी तथा सुखी थी, तो उनकी बातें पूर्णतः क़ार के बादलों की खोखली गरज जैसी होती है। क़ार बादल गरजते भर हैं, कभी बरसते नहीं, उसी प्रकार धनी लोग निर्धन होकर अपनी अमीरी की बातें करते हैं।

9) पाठ के किन प्रसंगों से आपको पता चलता है कि कुँवर सिंह साहसी, उदार एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह जगदीशपुर हार जाने के बाद भी संघर्ष को जारी रखा और अंततः उन्होंने जगदीशपुर पर पुनः अधिकार कर लिया। इतना ही नहीं, वे वीर एवं बहादुर भी थे। उन्होंने गंगा की तेज़ धारा में गोली से जख्मी अपने हाथ को काटने में जरा भी संकोच नहीं किया। वे एक उदार व्यक्ति थे। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति होने के बाद भी वे निर्धनों की। सहायता से पीछे नहीं हटते थे। उनमें स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा था। देशवासियों पर अंग्रेजों के जुर्म और अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सके और वे अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए तैयार हो गए।

10) कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'विप्लव-गायन' क्यों रखा गया होगा?

उत्तर- कविता का मूल भाव है गलत रीति-रिवाजों, रूढ़िवादी विचारों व परस्पर भेदभाव त्यागकर नवनिर्माण के लिए जनता को प्रेरित करना। इसीलिए इस कविता का शीर्षक 'विप्लव-गायन' रखा गया है जिसका अर्थ है क्रांति के लिए आह्वान करना।

* दीर्घ उत्तर प्रश्न

1) रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- रहीम के दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धन को जन कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

2)कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को

खेलने नहीं देगा।

3) 1857 के आंदोलन में वीर कुंवर सिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का 1857 के आंदोलन में निम्नलिखित योगदान है कुँवर सिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवर सिंह की वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई। इसके अलावे इन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुर और आरा पर विजय प्राप्त की। जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम से मिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर-दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आज़मगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। इस प्रकार उन्होंने मरते दम तक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

4) गांधी जी ने आश्रम के अनुमानित खर्च का ब्यौरा क्यों तैयार किया?

उत्तर- गांधी जी द्वारा लिखे गए पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' से हमें सीख मिलती है कि यदि हम कोई भी कार्य करना चाहें तो सोच-समझकर पहले ब्यौरा बना लेना चाहिए ताकि उसके अनुमानित खर्च को भी जाना जा सके तथा इस हिसाब से आगे बढ़ने का रास्ता भी साफ़ दिखाई देने लगता है। गांधी जी एक ऐसे आश्रम की स्थापना कर रहे थे। इसके लिए स्थान की ज़रूरत थी, आवश्यक वस्तुओं, पुस्तकों, भोजन की व्यवस्था करने की जरूरत थी। वहाँ सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन की योजनाएँ तैयार करनी थीं। वह आश्रम एक दो दिन के लिए नहीं, लंबे समय के लिए बनाया जा रहा था। अतः स्थायी व्यवस्था के लिए गांधी ने खर्च का लेखा-जोखा तैयार दिया।

5) गांधी जी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्च थे? वह उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे?

उत्तर- गांधी जी के अनुसार यदि अन्य खर्च अहमदाबाद उठा ले, तो वह खाने का खर्च जुटा लेंगे। उनके अनुसार आश्रम के मद में निम्नलिखित खर्च थे।

1. मकान और जमीन का किराया।
2. किताबों की अलमारियों का खर्च ।
3. बढ़ई के औजार।
4. मोची के औजार।
5. चौके के सामान।
6. एक बैलगाड़ी या घोडागाड़ी।
7. एक वर्ष में भोजन का खर्च- 6000 रु०।

6) कवि के अनुसार जीवन का रहस्य क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार, कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है। इस कविता का भाव है जीवन का रहस्य है। विकास और गतिशीलता में रुकावट पैदा करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके नया निर्माण करना। नव-निर्माण के लिए कवि विध्वंस और महानाश को आवश्यक मानता है। यह विनाश सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी मानसिकता, जड़ता तथा अंधविश्वास को काटकर दूर फेंक देगा। सारी रुकावट समाप्त कर नए सृजन तथा नए राष्ट्र को निर्माण का रास्ता साफ़ हो जाएगा। इसके लिए कवि द्वारा एक क्रांति की चिंगारी जलाने की जरूरत है।

7) खानपान की नई संस्कृति का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक का कहना है कि मिश्रित संस्कृति से व्यंजन का अलग और वास्तविक स्वाद का मज़ा हम नहीं ले पाते हैं। सब गड्डमड्ड हो जाता है। कई बार खानपान की नवीन मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का सही स्वाद लेने से भी। वंचित रह जाते हैं, क्योंकि हर चीज़ खाने का एक अपना तरीका और उसका अलग स्वाद होता है। प्रायः सहभोज या । पार्टियों में हम विभिन्न तरीके के व्यंजन प्लेट में परोस लेते हैं ऐसे में हम किसी एक व्यंजन का सही मजा नहीं ले पाते। हैं। स्थानीय व्यंजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान नहीं है और पुरानी पीढ़ी भी धीरे-धीरे इसे भुलाती जा रही है। यह खानपान की नवीन संस्कृति

के नकारात्मक पक्ष हैं।

8) आप खानपान में आए बदलावों को किस रूप में लेते हैं?

उत्तर- खानपान में आए बदलावों को आधुनिक परिवर्तन के रूप में ले सकते हैं। अब गृहिणियों के पास स्थानीय व्यंजन पकाने के लिए समय नहीं है और प्रचुर मात्रा में वस्तुएँ। अब समय की बचत के लिए जल्दबाजी में काम करती है। अतः कम समय में तैयार होने वाले व्यंजन का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन मैं तथा कथित फास्ट फूड्स-नूडल्स पिज्ज़ा बर्गर का पक्षपाती नहीं हूँ, क्योंकि इनके प्रयोग से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है|